पोशिमाल

रसूलमीर

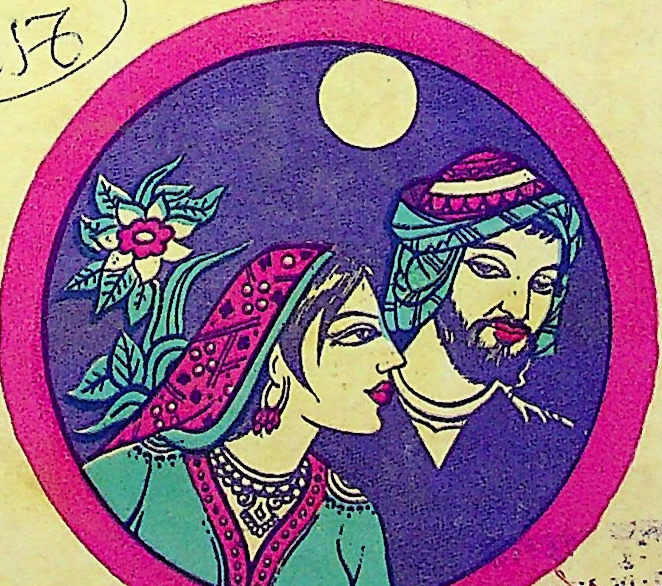

शारदा पुस्तकालय
(संजीवनी शा. द. केंद्र)
क्रमांक 456

शारदा पुस्तकालय
(संजीवनी शा. द. केंद्र)
क्रमांक ~~[illegible]~~ 456

पोशिमाल

रसूलमीर

जे० एण्ड के० अकादमी आफ आर्ट, कलचर एण्ड लैंग्वेजिज़, जम्मू

संकलन एवं अनुवाद
रतन लाल शान्त

प्रथम संस्करण : १९७७

सचिव द्वारा जे० एण्ड के० अकादमी
ऑफ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज़
नहर मार्ग, जम्मू के लिए
प्रकाशित

मूल्य : रु० ५.००

© अकादमी

स्पेसएज प्रिण्टर्ज़, जम्मू द्वारा मुद्रित

आवरण - शिल्पी : टी० एस० बत्रा

POSHIMAL (Kashmiri Poetry)
by Rasulmir translated into Hindi by Rattan Lal Shant

पोशिमाल

अनुक्रम

		पृष्ठ
१	पोशिमाल	... १
२	मैना री !	... ३
३	महबूब मेरा	... ४
४	पाषाण हृदय है यार	... ५
५	पिया	... ७
६	मुक्ताहल कहते हैं	... ९
७	जगत ने लीले नौजवान	... ११
८	रूठो न जाने जानां	... १३
९	जाने जां आया	... १५
१०	रूठो न, री !	... १६
११	धीमे पग धरो	... १९
१२	हाल सुनें पिय	... २१
१३	मेरा पिया	... २२
१४	आई बहार	... २३
	ग़ज़लें	... २५–६४

[illegible]

रसूलमीर : हिन्दी में

रसूलमीर की कविता को पहली ही नजर में देखकर हिन्दी का पाठक कहीं यह ज़रूर अनुभव करेगा कि मीर भाव और वर्ण्य की दृष्टि से कश्मीरी का कोई रीतिकालीन कवि था। जहाँ शृंगार रस और नखशिख वर्णन रसूलमीर की कविता का अभिप्रेत है वहां उसे रीतिकालीन प्रवृत्तियों का समानान्तर चितेरा माना जा सकता है। लेकिन कोई भी साम्य रेखा खींचने से पूर्व हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि इन दो भिन्न भाषाओं की मूल ऐतिहासिक और प्रेरणात्मक पृष्ठभूमि भिन्न थी।

१९वीं शती में हिन्दी काव्य में रीतिकालीन प्रवृत्तियां समाप्त तो नहीं हुई थीं, क्षयोन्मुख ज़रूर थीं। ब्रजमाधुरी मशीनों की गड़गड़ाहट भरे और धुएं से कड़आए वातावरण में अपने अर्थ का दामन समेटने लगी थी। विदेशी साहित्य तथा संस्कृति की घुसपैठ शुरू हो चुकी थी। चेतन साहित्यकार एक ओर अपूर्व परिवर्तनों से आश्चर्यान्वित हो रहा था तथा दूसरी ओर विदेशी सभ्यता के उपक्रम से कहीं भीतर घायल महसूस कर रहा था। इसलिए उसके स्वर में अभिभूति तथा व्यंग्य की ध्वनि पाई जाती है। और इसीलिए उस की कविता १७वीं-१८वीं शती की सी जनापेक्षी और दरबारों का शृङ्गार मात्र नहीं रह सकी बल्कि आम आदमी में रुचि लेने लगी थी। कश्मीरी

साहित्य का इस शताब्दी का चित्र कुछ और था। यहां की भूगोल-राजनीति भिन्न थी। तात्कालिक साहित्यकार— भक्त, सूफी, गज़ल-गायक, मरसिया निगार—परिवेश की कहानी आंशिक-रूप में और अर्धदार्शनिक संकेतों से कहते। लेकिन यह सत्य है कि राजनीतिक पराधीनता के बावजूद १९वीं शती की कश्मीरी कविता गुण तथा मात्रा दोनों दृष्टियों से समृद्ध है। विरासत में इसे मुख्यत: फारसी की शृंगारिकता मिली जिसमें किन्हीं निश्चित संदर्भों में गुलोबुलबुल, साकी, मै, जाम के संकेतों-प्रतीकों के माध्यम से सम्पूर्ण जीवन को नापा जाता है। हां, रहस्यवादी या सूफी संदर्भों से अर्थ गहरा जाते हैं। कवि, स्त्री तथा सुरा वर्जित, धर्मानुशासित परिवेश में इन दोनों की ललक को तड़प की हद तक प्रकट करते हैं। नखशिख वर्णन मांसल होता है और निवेदक कभी स्वयं को स्त्री कल्पित करता है तो कभी मदिरा पिलाने वाले लड़के— साकी का रूप धारण करता है। फारसी शायरी के अपने बहाने थे और हिन्दी के रीतिकालीन काव्य का अपना 'बहानो'। फिर भी १९वीं शती को हम कश्मीरी साहित्य का रीतिकाल नहीं कह सकते। इसी समय परमानन्द से कृष्ण भक्त और प्रकाशराम से राम भक्त कवि हुए। फारसी परम्परा का प्रभाव कमोबेश दोनों पर था। वास्तव में फ़ारसी भाषा, साहित्य तथा संस्कृति का प्रभाव कश्मीरी पर आज तक रहा है। रसूलमीर की जीवनी, पृष्ठभूमि और प्रेरणा देखते हुए यह अवश्यंभावी था।

उन्नीसवीं शती के आरम्भिक दशकों में (तिथि निश्चित नहीं) 'डूर' (शाहबाद, वेरीनाग) में रसूलमीर ने जन्म लिया। बचपन से ही प्रसिद्ध कवि तथा फ़ारसी बहुल ग़ज़ल के गायक 'महमूद' गामी के सम्पर्क में रहे और बाद में उनका विधिवत् शिष्यत्व स्वीकार किया। उनके 'मकतब' में नियमतः 'तालीम' पाते रहे। 'रसूल' ने फ़ारसी भाषा तथा छन्द पर अधिकार प्राप्त किया। उन्होंने फारसी में भी कुछ शेर कहे। कश्मीरी में इन की करीब सौ गज़लों के रचने की बात कही जाती है पर प्राप्य बहुत कम हैं। गज़ल में परम्परानुसार, प्रियतम को संबोधित किया जाता है। मौखिक परम्परा तथा कवि-विश्वास के अनुसार 'रसूलमीर' एक स्थानीय हिन्दु लड़की क्वंग (=कुंकुम) से प्रेम करते थे। अधिकांश गज़लों में परोक्षरूप से उसका वर्णन हुआ है और उसे विभिन्न रूपकों द्वारा चित्रित किया गया है। उसे 'राजहंसिनी' कहा गया है; पर एक गज़ल में तो उस का नाम लेकर उसे सम्बोधित किया गया है—

'क्वंगी, च़ हावतय पान !'
(क्वंगी ! दर्शन तो दो)

'रसूल' ने जितना प्रिया का लावण्य और अपनी प्रेमाकुलता वर्णित की है उतनी ही विरह की तड़पन भी। कहा जाता है कि 'क्वंग' का विवाह गांव से कहीं बाहर हुआ लेकिन वह उसे भूल न सका। कदाचित उधर से भी स्निग्धता बनी रही थी। यों कहा जा सकता है कि यह प्रेम मौन रहा और इस ने तत्कालीन समाज के लिए कोई समस्या पैदा नहीं की। जो भी हो, 'मीर' प्रिया को देखते ज़रूर रहना चाहते थे। अतः उसकी अनुपस्थिति उनकी

विरह-कविता की प्रेरणा बन गई। फारसी परम्परोचित विप्रलंभ शृंगार मीर की कविता का शृंगार बन गया। इस में कवि का 'सनम' रूप और यौवन मस्ती में झूमता है और भाषा में अलंकारों की छटा का कारण बनता है, यों भी 'मीर' का प्रिय सीमातीत छवि का स्वामी है। फारसी के प्रेमी शायरों की तरह वह इस्लामी वर्जनाओं के प्रति नैसर्गिक आकर्षण से छटपटाहट की अनुभूति प्रकट करता है। कश्मीरी की गज़ल परम्परा को मिठास और संगीत से समृद्ध करने का श्रेय इसे ही है। फिर भी परम्परा कहीं-कहीं रूढ़ि बन कर मीर की गज़ल को वक्रोक्ति, उक्तिवैचित्र्य तथा समस्यापूर्ति मात्र बना छोड़ती है।

श्रीनगर
दिसम्बर, १९७९ —रतन लाल शान्त

पोशिमाल

•

धन्य तुम्हारा पार्श्व तुम्हारी पृष्टच्छवि और चाल है,
चली खेलने कुसुम कली चंचल बाला 'पोशिमाल' है[1] ।

राज हंसिनी की हंसिनी सी गर्दन कितनी कोमल है,
रक्षा करो इलाही ! इसकी, दुनिया की नज़रे-बद से
कम क्या होगा तुझे दयानिधि, तेरा कोष विशाल है
चली खेलने कुसुमों सी कोमल बाला 'पोशिमाल' है ।

सिर पर घन कुंतल पर कुलही[2] कितनी सोह रही है
मली हुई हैं इनमें इत्रे, कस्तूरी और गंध-सुगंध
धायें और दासियां-सेविकाएं संवारती बाल हैं
चली खेलने कोमल पुष्पों सी बाला 'पोशिमाल' है ।

गणना यदि होगी बाला के बालों के सब जालों की
इनके लक्ष-हज़ारों फदों को गिनने में पक्ष लगें
जान न छूटे व्यसन न छूटे भागा जाए काल है
चली खेलनें कुसुम कली चंचल बाला 'पोशिमाल' है ।

पैर पड़े जब ता थेई थेई तो घुंघरू बाजे झन्न-झन
सुनकर छूटा धैर्य इन्द्र का दौड़ा आया वह उन्मन
ढाई फूलों सी भारी, बस इतनी तन्वी बाल है[3]
चली खेलने कोमल पुष्पों सी बाला 'पोशिमाल' है।
कण्ठ बन्ध ढलका नीचे स्तनों के झलके दो अनार
विह्वल हुए फिरिश्ते जब उन्होंने देखा यह छवि संभार
चाहत में डूबा 'रसूलमीर' उसका तो बद हाल है
चली खेलने कुसुम कली चंचल बाला 'पोशिमाल' है।

—: ० :--

---

1. प्रिया का संबोधन, शब्दार्थ : पुष्पमाला।
2. काले बच्चों या स्त्रियों का गोल जडाऊ टोप।
3. पाठान्तर : तन मन से पूजा संजो रही पुष्पों की पोशिमाल है।

मैना री !

●

टुक ध्यान धरो मैना बावरी
सन्देसा तोते से कह री !
करुणा उपजा बतला पिय को
रोऊं मैं बाला घरी घरी !
बादाम नयन जब से खोले
हुई तभी से मैं बावरी !
जुल्फ जीम हैं मीमबदन[1]
पारद मन तन है रजतधरी !
कामदेव ने सन्न किया
ताने दे सौतन महरी !
मैं बाला थी श्वेत जुही
हुई सोन जुही और केसरी[2] !
पिघली अषाढ़ के आतप में
एक हिमानी ज्यों छहरी !
जग ताने दे क्या चिन्ता है
भेंटे मन से मन की लहरी !
नेह चिता में दहे पतंगा
भड़काए जलकर अग्नि-लरी !
'डूर' 'वेरनाग' में उसे ढूंढू[3]
वह 'रसूलमीर' की भूमि हरी !

---

1. जुल्फ फारसी वर्ण 'जीम' से कुंचित हैं और मुखड़ा 'मीम' सा गोल।
2. मेरा रंग पीला पड़ गया।
3. अनन्तनाग के निकट के गांव।

महबूब मेरा

•

आली, मेरा मोहन छैला, महबूब नहीं आ गया अभी ?
कंपकंपी छूटे, मैं मर जाऊं, है शेष मेरा अरमान सखी।

शेष रहा अरमान मुझे तो सोचा पूछूं 'इशक पेच[1]' से
प्रश्न सुना तो रस्सी पर बट गया, दिया संधान यही।

खिलते गुल इठलाएं बुलबुलें, रूठ परस्पर कहती हैं
भोगा न यार मैंने तेरा, कुसुमित सुन्दर उद्यान सखी।

सब वादे कसमें भूल गए, मुझ को तूने सीधा जाना,
अच्छा था मचलाए ही ना होते मेरे मन प्राण सखी।

ज़ाया कर दिया मुझे होले, दैया ! मेरी ममता भूले
तड़पोगे, मुझे सुलाएं जब मिट्टी में, हो अवसान सखी।

वह गया रूठ मुझसे, जिसकी आशा थी बस मेरे दिल को
अब कौन मनाए, ए रसूल! तू किससे करता मान अभी।

—: o :—

---

1. फूल जिसकी बेल किसी रस्सी के सहारे चढ़ती है।

पाषाण हृदय है यार

•

पाषाण-हृदय है हाय, बड़ा तू यार।
तेरे प्राण और मन की कसम।
सकुचाया मन मारा मुझको दिलदार!
तेरे मुकुल बदन की कसम!
दरद इशक का बड़ा कठिन है क्रूर
भार प्रणय का ढोते हो गई चूर।
'अलिफ'-कद मेरा 'दाल' बना झुक, झार!
तेरे सरू-कद बदन की कसम।
तेरी आंखों में कजरा है कोमल
मेरी आंखें बेहोश हुईं बेकल।
यों उसे नहीं रे रोष भरे दिलदार।
तेरे रहस्य-दर्शन की कसम।
तूने उल्फत का मारा ऐसा वाण
जकड़ गए सब चीन और हिंदोस्तान।
छल से रोका मेरे दिलका व्यापार।
तेरे घुंघराले कुन्तल-घन की कसम।
जैसे कुसुमों पर लहराते संबुल[1]
जालों में बद्ध हुए शतशत बुलबुल।
मचलें दिल रसिकों के वे उठें पुकार
तेरे संबुल-सदन की कसम।

जग में क्या मिले नेह से सनम मेरे
जब रहे बेवफाई उसको बस घेरे ।
विरहा दो को अलग करे, दुख डार ।
मेरे मीत-धन की कसम ।
तुझे पुकारें अलबेले कुसुमित तन
मुझको मुर्झाया हाय थी मैं फुल्ल सुमन ।
फिरे वचन में प्रथम तुम्हीं दिलदार ।
तेरे वायदे-वचन की कसम ।
तीर इशक का लेकर दिल में हाय
मैं भटक रही दर दर पछाड़ ही खाय ।
कब निकले मन से तीर यह तीछनधार ।
तेरे वाण की चुभन की कसम ।
क्या करे कोई जब मन ही हो बेचैन
वो जाने जो यह समझे मेरे बैन ।
बेबस 'रसूल' है मीर किसे दर्शाय ।
तेरी नींवि के कुंतल धन की कसम ।

---

1. पुष्प विशेष ।
2. प्रिय-प्रिया ।

पिया !

●

मेरे मनवासी ! पीर हृदय के ! रे दिल के आराम पिया ।
रे पुष्पस्मित, कुसुमित कपोल, सुमनबदन बेनाम पिया ।
कद ऊंचा तेरा 'अलिफ',[1] जुल्फ है लाम'[2] व
मुखड़ा 'मीम'[3] है ।
तेरी छवि से मैंने अक्षर सीखे, 'अलिफ' व 'लाम' पिया ।

देह तेरी शमशाद,[4] तन कुसुम, अधर मुकुल, कुन्तल संबुल ।
बंगाली जादू करती हैं, आंखें तेरी बादाम पिया ।

फक हुआ रंग सूरज का जब शशि वदन तुम्हारा देख लिया ।
बांका क्वार का चान्द हुआ, और उसे हुआ सरसाम[5] पिया ।

गर्दन झुका ली संबुल ने, गुले-लाला ने भी याम लिया ।
कुंचित कुन्तल तेरे देखे, तिल देखा मुख पर श्याम पिया ।

तेरे (मेंहदी) रंगे हाथ, तलवार बने जब जूझ पड़ें ।
टिक सके तुम्हारे हाथों के आगे 'रुस्तुम' या 'साम'[6] पिया ।

रुचि-संयुत मेरा यार गया जैसे पारद, अनजाने में ।
हो सके नहीं मेरे बस में, ले गए मेरा आराम पिया ।

निकलूं भटकूं बाज़ारों में, ये कुसुम वसन कर तार तार
न्यौछावर और बावरी हुई, पद्मिनी तेरी बदनाम पिया ।

अग्निशिखा में दही सिया तो रही लाज, पिय नेह रहा
रचे नेह के गीत कर सकी रामचन्द्र को राम[7] पिया ।

मेरे दिल का वेहाल पूछ प्राणों से, दूत मेरे ये हैं
मैं अनजाना हूं कलम न जानूं संदेसा-पैगाम पिया।
रूपराज में तेरे, जब नयनों का रक्तिम मद देखा
भिक्षुक हैं जमशीद[8] बने, खुरशीद[9] भी लेकर जाम पिया।
तन झटक, तोड़ के वचन चले तिरछे नयनों से न देखा
तेरी चाहत में दिल डूबा, जारे मुझ को यह घाम पिया।
रूप तेरा कुन्तल तेरे जाने है दीनोधरम 'रसूल'
वह क्या जाने है कुफ़ भला, क्या होता है इस्लाम पिया।

1–3 फारसी वर्णमाला का 'अलिफ' सीधा तना हुआ, 'लाम' वक्र, तथा 'मीम' का सिर गोल होता है।

4. वृक्ष।

5. पीलिया का रोग।

6. दो ईरानी योद्धा।

7. वश में।

8-9. प्रसिद्ध ईरानी दानी राजे।

मुक्ताहल कहते हैं

•

मेरे प्रिय, तू है मणि अमोल
अनजान तुझे केवल मुक्ताहल कहते हैं।
'रवि'[1] का सा भास्वर रूप तेरा
ये दृष्टिहीन 'पद्मिनि'[2] ही केवल कहते हैं।
वक्ष स्थल पर के ये उभार
देखें जो, दिल को जायें हार
अनार न क्यों स्तनों को मधुमय कहते हैं।
कद देख तेरा डोलते वीर
टूटे जाते ज्यों तेज़ तीर
शमशाद[3] रुपहला सरू[4]-सा चंचल कहते हैं।
चितवन है तेरी तेज़ तीर
हर भौंह इरान की है शमशीर
नयनों को तुरक[5] और मद-विह्वल कहते हैं।
तेरे अधरों के ये रसाल
हैं यमन बदख्शां[6] के सु-लाल
निज को रंजित रक्तपान[7] निर्मल कहते हैं।
ओ जुल्मी प्रिय, मन की आफ़त
ओ मेरे ईमान के भंजक
प्राणों की राहत, तुझे, ओ सरल! कहते हैं।

शोभित है रूप तेरा सरसे
ज्यों कंदहार[8] पर चांद लसे
तुम को जगती का सदय सुधाकर कहते हैं।

हो भले 'रसूल'! मुकुलाधर पर
बदनाम हुए, खुश रहो मगर
आज्ञाकारी, तुझको प्रेमाकुल कहते हैं।

1-2. सूर्य तथा पद्मिनी का स्नेह काव्य पर आरोपित है पर पद्मिनी रवि से लघुतर होती है।

3. देवदारु-सा लम्बा पेड़। 4. सरू का पेड़

5. तुरक लाल कल्पित किए गए हैं।

6. ईरान का प्रदेश 7. तांबूल, खाने वाला पान

8. अफगानिस्तान का शहर।

जगत ने लीले नौजवान

कुटिल समय (जगत) ने लीले कितने सुन्दर गबरू नौजवान
गाँठ बांध ले यह, मेरी सुन्दरी प्रिया !

छवि तेरी ऐसी उजली जैसे नभ में चन्दा चमके
लुभा रही मन मेरा तू, सुन्दरी प्रिया !
तेरी टोपी के नीचे फंदे बालों के यों चमके
गांठ बांध ले यह, मेरी सुन्दरी प्रिया !
प्यार के गांव की सुकुमारी जोबन का हो मान किए
घूंघट अपना तो हटा जरा सुन्दरी प्रिया !
परिधान फबें अतलस[1] के दोबाला तेरी शान किए
गांठ बांध ले यह, मेरी सुन्दरी प्रिया !
क्यों जाल बुन रहीं अलकों के, ये सम्बुल[2] जैसी काली हैं
और उठेंगे मचल हमीं, सुन्दरी प्रिया !
उलझी थीं किसने सुलझाईं तेरी अलकें घुंघराली हैं
गांठ बांध ले यह, मेरी सुन्दरी प्रिया !
मिश्री इलायची और बादाम, खुर्मानी-गिरियों की बहार
और रुचे क्या तुझे बता, सुन्दरी प्रिया !
तुझ को आना होगा ज़रूर जब भेजूं मैं प्रेमोपहार
गांठ बांध ले यह, मेरी सुन्दरी प्रिया !

मैं हूं तेरा, नागिराय[3] तू मेरी प्रिय हीमाल[4] अरी
लैला जैसे मजनूं की सुन्दरी प्रिया !

शालिमार में इंतज़ार करलूं, जोहूं मैं बाट तेरी
गांठ बांध ले यह, मेरी सुन्दरी प्रिया !

---

1. एक बहुमूल्य कपड़ा
2. पुष्प
3-4. कश्मीरी लोककथा के दो प्रेमी ।

रूठो ना जाने जानां

•

तू मेरे जिगर का अंश, मान ! रूठो ना जाने जानां
छवि का तुझको कितना गुमान ! रूठो ना जाने जानां।
मृग सी चंचल तेरी आंखें बादाम कहूं या इन्द्रजाल
छलकाया मधु हर होश लिया ! रूठो ना जाने जानां।
कुण्डल सोनल हैं बालों में—क्या संवरा है यह छवि उपवन
सुंबल[1] अछ पोशो[2] का उद्यान ! रूठो ना जाने जानां।
जुल्फें काले व्यालों सी हैं—घुंघराले हैं सब बाल जाल
लहराते अंसों पर सु-नाग ! रूठो ना जाने जानां।
यह मेंहदी लगे भली कितनी—इन से तूने मारे जारे
हत्या कर दी सैंकड़ों जान ! रूठो ना जाने जानां।
छिप गए आवरण के पीछे—बेदर्दी यह कैसी आदत
सरसा अब निशि का कर अवसान ! रूठो ना जाने जानां।
क्या दोष मेरा क्यों भुला दिया—थी यही वफा की शर्त भला ?
तुम भूल गए हर वचन, प्राण ! रूठो ना जाने जानां।
अवकाश ज़रा लो, गम भूलो—है यही गनीमत क्षण, जानो
सुन लो आलिंगन का आह्वान ! रूठो ना जाने जानां।

मैं मोल तेरा किस हाट करूं—किस निर्जन में, बाज़ारों में
दुलराउं तुझ को कानों में कानों के बाले मत रूठो।
परवाना बनकर मंडराए शम्मा-रू[3] दिलबर पर 'रसूल'
है यही इश्क का अग्निमान ! रूठो ना जाने जानां।

—:०:—

1-2. फूल
3. दीप-छवि।

जाने जां आया

•

अलकें संवार कर घुंघराली मेरा जानेजां आया री
फांसने मेरा दीवाना दिल वह जंज़ीरें लाया री।
है बंधा नहीं मेरा दिल ही, हूं एक न मैं ही गिरिफ्तार
मेरे पिय का है यही करम, दोनों दुनिया में छाया री।
उसकी छवि से हर कुसुम खिला, उसकी छैयां से रंगा-चमन
क्यारी-क्यारी में जोत जलाता मेरा छैला आया री।
उसकी छवि रूप का काबा[1] है, भौहे काबे की मेहराबें
प्रेम पंथ में उन भौहों का नमन मुझे है आया री।
बज रहा इश्क का साज़ सुनो ठहरो देखो पट हटा ज़रा
उत्थान पतन सुन लो सुर का यह चंग बजाता आया री।
मदमातों के दिल फोड़ रहा चितवन के बाणों से दिलबर
मेंहदी के बदले उसी खून से नाखूं रंग कर आया री।
जिगर कढ़ाही में भूंजा मैं ने पियरा के नेहा में
मैं देख रही इधर उधर वह किन के न्यौते आया री।
गले लगा लूं कुसुम बाण, मिल कर यह दाग धुले शायद
तुम बिना चमेली का मेरा उपवन, कांटों से छाया री।

---

1. मक्का की पवित्र मस्जिद।

रूठो ना, री !

●

रूठो ना रूठो पोशिमाल !
यें नाज़ हुस्न के नहीं हर देश काल ॥१॥

●

बाल तेरे शृंखला बने
जाल आशिकों को फांसें
सीधा था 'अलिफ'[1] पर तुझे देख,
वह 'दाल'[2] बन झुका लज्जा से ।
शमशाद-सरू सी उच्च भाल !
ये नाज़ हुस्न के नहीं रहें हर देश काल ॥२॥

●

तेरे दर्पण-से अंसों पर क्या झूल रहे हैं ये कुन्तल ?
या 'बिस्मिल्ला' इन शब्दों से दमके कुरान का शुभ आंचल?
लिख गया स्वयं जो जुलजलाल ।[3]
ये नाज़ हुस्न के नहीं रहें हर देश काल । ३॥

●

'इश्क-पेच'[4] से घिरा हुआ है 'अरगवान'[5] का अरुण फूल
जैसे कार्तिक के चन्दा को घेरें दो विषधर सर्प शूल
यों रखे स्तनों पर सूत्र डाल !
ये नाज हुस्न के नहीं रहें हर देश काल ॥४॥

●

मिश्री से भी मीठे हैं ये तेरे दोनों रक्त-अधर
याक़ूते-रमानी[6] से बढ़कर या यमनी[7] हीरों से सुन्दर
हैं मधुर सरस रक्ताभ लाल ।।५।।

●

भौहों के ये बाण तेरे हीरों का फाल मढ़ा इन पर
मेरा मन पांखी तड़प उठे इनसे है उसका छिदा जिगर
वीर कौन जो तीर सहे ऐसे कराल ।।६।।

●

कानों के जितने मूढ़ विवर बाले भी उतने ही सुन्दर
सोनल कुंडल झूमें झूलें लटके हैं मोती के झालर
कौन हाथ हैं रहे सम्हाल ।।७।।

●

मस्तूर छटा छवि कानन की नरगिस का एक प्रफुल्ल फूल
नन्दनवन की हो नरगिस री मदिरा पी कर ज्यों रही भूल
किसने मद पिला किया बेहाल ।।८।।

●

कोई हिन्दवी कृष्ण वर्ण 'माचीन'[8] का है सरदार बना
सह रहा वक्ष पर गुले लाला जो दाग वही संभार बना
हीन हो गया चांद देख यह तिल विशाल ।।९।।

●

आहत सीना री, 'रसूलमीर' किसे खोलकर दिखलाए ?
दग्ध हुआ मेरा अन्तस तुझ को तरस नहीं आए।
प्रणय चला यह सदा चाल ॥१०॥

1. फारसी वर्णमाला का सीधा खड़ा वर्ण
2. फारसी वर्णमाला का झुका कुबड़े की सूरत सा वर्ण
3. ज्योतिस्वरूप ईश्वर
4-5. पुण्य विशेष 6-7. स्थानों के नाम याकूत-मणि
8. चीन से परे का गोरे लोगों का काल्पनिक देश।

धीमे पग धरो

●

दूर दूर से आ री लेकिन धीमे पग न धरो सजनी।
क्षण भर तो वहीं रुको पग वहीं धरो सजनी।

हिलरा कर कर्ण फूल अपने
हो झूम झुलाती पैरों को
है हूरों[1] को भी लजा रही यह रूपाभा तेरी सजनी।

तेरी जुल्फों के डोर खुले तो धनुष खिंचा
औ' बंधे आशिकों के हिरदै
कितने रसिकों के प्राण लिए यों ही इन नागों ने सजनी।
तेरी काली आंखें रक्तिम
रूप और परिधान श्वेत
तुझे देखकर 'मसवल'[2] और जुही और नरगिस मुर्झाई।
मेंहदी रंजित नाखून तेरे जब ही गुले लाला[3] ने देखे
तो रोग इश्क का उसे लगा
चुपचाप 'आरवल'[4] बेचारी है दाग जलन के सह जाती।
दर्पण तेरा वक्ष हाथ और पांव तेरे ज्यों गुलदस्ता
या 'ही'[5] पुष्पों की राशि राशि सुख सावन का
हों भोग रही।

सजनी! तुम कान धरो मेरी मनुहारों पर
मैं करूं निछावर तेरे पैरों पर यह सिर।
तेरी छाया-परछाईं को मैं बांधूं बाहों में सजनी।

'महशर'[6] के दिन मैं आया हूं
खोजता तुझे हर कहीं 'रसूल'
पता बता दो ठीक मुझे, मैं वहीं करूंगा
इन्तजार तेरा सजनी ।

—: ० :—

1. जन्नत में रहने वाली अप्सराएं
2-3. फूल 4. पानी का एक फूल
5. एक वसन्त-पुष्प ।
6. कयामत या अन्तिम परीक्षा का दिन ।

हाल सुनें पिय

●

हर लिया मनोहर ने यह मन मेरा पिय हाल सुनें, सखी !
शालिमार में फूल खिलें उन को लेजा यह आलिङ्गन,
आएं वो छिपके सरसायें राशि राशि फूलों के मन।
स्नेह सिक्त भालों की नोकें मेरे सीने को वेध गयीं,
निर्दयी छेद सब, भीतर कर निकली शानों को छेद गयीं।
मैंने शत शत के तूस[1] लिए और मदन के लिए सूत्र बुने
लेकिन पिय मेरा मीत मेरा न धरे ध्यान न बात सुने।
हैं चिपक रहे मेरे मन पर कितने काले दाग जलन के,
जाऊं वारी खो गया पिया भरमाया वह किस सौतन ने।
निज कामदेव को श्वेत वसन सिर पर अनार की एक कली
रुचि से खूब सजा उसको बावरी घर से मैं आज चली।
सुन्दरी रात भर जगी रही देखूं मुख तेरा जागो तो
इस नींद के माते ने देखो कर छिन्न भिन्न मारा मुझको।
मीठे हैं अधर पिया के दो हीरों से तुलना कर न सकूं,
मुक्ताहल दान्त चमकते हैं मैं लोभ संवरण कर न सकूं।

—: ० :—

1. तूस=बहुमूल्य सूत्र जिसकी शाल-साड़ी बुनी जाती है।

मेरा पिया

●

कितने लुटे, कितनों का करार लूटे मेरा उन्नतग्रीव पिया !
उसके कानों के सात बाले अलकों के नीचे भूल रहे
सोने के कुण्डल हिलराए मेरा उन्नतग्रीव पिया।
क्या जानूं किसने गढ़े झड़े उसके केशों के नव जाले
ज़ंजीरों में फांसे मिरगे मेरा उन्नतग्रीव पिया।
मृग के से नयन कजरारे खुद मृग देखें बेचैन हों
शेरों को जकड़े नज़रों से मेरा उन्नतग्रीव पिया।
माथे पर स्याही बिन्दु रमे कुमरी[1] ज्यों विरमे डाली पर
परिमल जैसे भौंरा परसे मेरा उन्नतग्रीव पिया।
है ओस सुमन सुन्दरता पर स्वेद बिंदुएं दो उभरीं
या फिरें चान्द पर दो तारे मेरा उन्नतग्रीव पिया।
माथे पर तेरे, मेरे सनम नासिका सजे ज्यों एक कलम
भाग्य आशिकों के लिखता मेरा उन्नतग्रीव पिया।
'रसूलमीर' हो ज़रा प्रकट पहचानो अपना यार ज़रा
दिल के सब दर्द कहो, सुन ले मेरा उन्नतग्रीव पिया।

—:o:—

---

1. पक्षी

आई बहार

•

आई बहार !
रूठ नहीं ऐसे में मेरे प्यार !

आई बहार !

बाग 'अदम'[1] का आज खिला चहुं ओर
बादामों में खिल आई है बौर
ज़रा धर पग कदम तो रोक ले क्षण भर
नहीं समां यह आए है हर बार !
आई बहार !

देखा मैंने कामदेव था आज बड़ा छविमान
अंग अंग पर, आह ! छबीले पहिने था परिधान
मैं बोरी हूं मुग्ध करूं उसका संधान !
आई बहार !

'सम्बुल'[2] के फूल बड़े निष्ठुर
घेरें हैं 'अरगवान'[3] को नित्य
फूल खिलें ज्यों 'कारेपत्य'[4], जुल्फें तेरी हैं यार !
आई बहार !

पवन सुबह की उपवन में है डोल रही
फूलों में रहस्य मन का है खोल रही
बुलबुलें रहें पीछे क्योंकर
लगी झाड़ने वे लम्बे व्याख्यान !
आई बहार !

'इश्क़-पेच'[5] ने कहा, सुना वह तुम ने क्या ?
है नहीं बात कोई भी तो
क्यों वधे डोर, भूले फांसी क्यों मृत्यु बुलाने स्वयं जाय ?
आई बहार !

प्रिय का ज्वलनशील है रूप
खिले आषाढ़ की या शुद्ध श्रावणी धूप
वह जोबन की मतवाली
है आज चली परिधान श्वेत पहिने और करने विहार !
आई बहार !

यार मेरा यदि गुलशन है
फूलों का विकसा उपवन है,
तो 'रसूलमीर' है एक चिहुंकती बुलबुल
क्यों न करूं फरियाद न रोऊं ज़ार-ज़ार ?
मुझ को प्रीतम ने डाला मार !
आई बहार !

---

1. जन्नत का उपवन
2. कृष्ण वर्ण पुष्प विशेष
3. रक्त वर्ण ,,
4. पुष्प
5. पुष्प विशेष जिस की वेल डोर से लिपटते हुए चढ़ती है ।

गज़ल

●

मेरा पगला है यार और दीवाना मैं क्या जानूं,
किसे कहूं, है कहां गया वह दीवाना मैं क्या जानूं ?
मैं थी वन की सारिका झपटा मार गया शाहबाज़ मुझे
किस डाली पर है बना आशियाना उसका मैं क्या जानूं ?
मैं सन्न हुई चंदा जैसी जब ही मैंने यह कहीं सुना
है किया और औरों से उसने याराना मैं क्या जानूं ?
रहस्यमय उसकी कमान, जिसका गुण इतना नाजुक है
है धनी लक्ष्य का वह, उसका चूके न निशाना क्या जानूं ?
भौहों के खंजर से मुझको वह काट गया री, हाय मरी
घायल मैं हुई जानता वह बस मुझे मारना क्या जानूं ?
आग लगादी ज्वलन काठ से धू-धू कर मैं भस्म हुई
बदा भाग्य में आंसू से था नयन भिगोना क्या जानूं ?
शमा पिया है मेरा जिस पर शत-शत परवाने टूटें
क्योंकर मुझको वह याद करे है मुझको घुलना क्या जानूं ?
इधर रुख करे वह तो उसकी जुही-देह मैं नहला दूं
कस्तूरी से सुरभित कर दूं उबटन मलना मैं क्या जानूं ?
ऐ 'रसूल' मैं उसे सुनाऊं पीर हिया की सुन लेगा।
यह जग न रहेगा बस केवल होगा अफसाना क्या जानूं ?

—: ० :—

गज़ल

●

जुल्फें हैं ज़ंजीर यार की विनय सुने कब मेरा प्यार ?
दीवाना करके छोड़ गया वह परी वदन वह प्रियाकार।
सरवोन्नत पिय यदि आए, तो एक कयामत ढाए।
घायल कितना सहूँ, देह को मैं ने तिल-तिल भस्मा दिया,
मुझ को पिय ने वन से लाया और जलाया झाड़ झार।
जान जाएगी किसे बताऊ खेल भाग्य के समझाऊं
वादा उसने टाला, फिर खुद भाग चला वह शाहमार।
सुम्बुल गुलों की छाया में फूलों के पड़ोसी कर्ण फूल,
बातें मेरी विस्मृत कर दीं भूला सब वादे करार।
हाथ का कंगन, कर्ण फूल वह सहृदय मेरा हृदय चोर,
बुरी नज़र ना लगे उसे वह मेरे गले का मुक्ताहार।
नयन पिया के काफिर हैं हाथों में लेकर तलवारें,
हाय ! अदाओं की सेना का सेनानी वह घुड़सवार।
नज़रें उसकी अरुणिम इतनी जैसे विष हलाहल,
थिर नहीं पियारा, पाऊं क्योंकर, जाए वह रफ्तार।
दिल का दुखड़ा किसे कहूं सखि मेरा हाल सुधारो
घाव प्रेम का वही भरेगा घावों का वह प्रतीकार।
संग सेज पर मखमल की मैं ने प्रिय को सोए देखा
जागी तो पाया ना, टूटी मैं, चन्दा जैसी बीच धार।
मेरा जिगर सुन्दर है, पर क्या हुआ उसे मैं ना जानूं
मैं घात करूं अपना, वन वन भटकूं, पियको खोजूं विकार।
सिर वारूं उसके पादों पर पर मदन समझ कब जाएगा
कब आए रोऊं ज़ार ज़ार कब पा लूं उसका दीदार ?

गज़ल

●

अजगर सी ज़ुल्फों से मुझको तूने मारा, ए दीवाने !
बीमार खुमारी आंखों से अब एक नज़र बस देख जाओ !

मेरे एक हृदय के तीन टूक कर दिए जादूगर ने
सुस्मित ओ मधुरभाष, शुभगामी प्रियतम अब तो देख जाओ !

भौहों की तलवारों से डाला कतर हृदय मेरा, ज़ालिम !
अवसन्न किया रे जिगर, ओ मेरे जिगर ज़रा तो देख जाओ !

सीधी नज़रों से देख मुझे, आवारा अब मैं हुई सनम
क्या करूं नहीं बहा सकती अब अश्रुधार, अब देख जाओ !

कमज़ोर एक बुलबुल हूं क्यों बर्दाशत करूं यह निर्दयता
हाल सुनाऊं तुझे हृदय-गुलज़ार ! ज़रा अब, देख जाओ !

अभिमान तुझे यौवन का, चोर मेरे यौवन के ना रूठो
बचपन है मेरा बेबस यह देहभार खुद, देख जाओ !

चचल न बनो, प्रिय, यों मुझ को मत मारो तीखे मोह तीर
सीने की ढाल धरूं आगे, ए कमानदार, अब देख जाओ !

'रसूल' डाला मार मुझे, ए पिया जान कुर्बान करू
तेरी अभिलाषा में खुद को डालूं मार, अब देख जाओ !

—: o :--

ग़ज़ल

•

आशिक हैं मस्त पिये मदिरा
री 'कोंगी' ! दरस दिखा जा ।
मद और पिलाओ, ये उबरें
री 'कोंगी' ! दरस दिखा जा ।

फूल विकल बुलबुलें तड़पें
मनीषी हैं परेशान — !
पुष्पों में सोए हैं अजगर
री 'कोंगी' दरस दिखा जा ।

यह 'अलिफ' कद ढाए कयामत
शमशाद पेड़ भूले — ।
काली जुल्फें हैं बड़े व्याल
री 'कोंगी' दरस दिखा जा ।

तिल तेरे है कपोल पर
वह दाग गुले लाला ढोए ।
कद सरव ढका रेशम से
चेहरा है ज्योतिर्मान ।

जाड़े भर किया इंतजार
भागा तू पोगल परिस्तान ।
ढूंढा बहार में पर्वत पर
री 'कोंगी' दरस दिखा जा ।

'नौगाम' में खबर तेरी सुनी
रहते हो तुम 'सोगाम' ।
खोजूं 'सोगाम' औ' 'वंगी'
री 'कोंगी' दरस दिखा जा ।

मैं खोजूंगा तुझे 'वेरीनाग'
पगला हो अनजान बनूं ।
चीनमुण्ड की घटनाएं सुनूं
री 'कोंगी' दरस दिखा जा ।

छिपके 'रसूल' यार ढूंढे
जिस ने किया परेशान ।
पीर मिले तो विनय करे
री 'कोंगी' दरस दिखा जा ।

—: ० :—

गज़ल

•

साकिया सार तत्त्व पिला मै जामे जम ।
प्यासे अधरों को तृप्ति मिले
नहीं तो विष खाऊं ।
पुण्य कमाओ या गुनाह
पिला मै जामे जम ।
सुम्बुल की छाया में गुलाब
है रूप तेरा यों छिटके
तम में ज्यों चमके माहताब,
पिला मै जामे जम ।
यह मारक-सा व्यवहार तेरा
ए जालिम मुझको मार दिया
कुंतल तेरे चमके गुलाब,
पिला मै जामे जम ।
लगती है शमशेर सदृश
ये भौहें हैं या धनुष वाण,
या चांद दूज का या मेहराब
पिला मै जामे जम ।
फस गया भंवर में दिल
तेरी ठोडी का तालाब ।
थिर गया हाय गिरदाब
पिला मै जामे जम ।

वजते सुर ज़ेरो--वम
जल रहा सोज़े कवाव ।
साज़ पर चले मिज़राव
पिला मै जामे जम ।
तेरे गम में ही नवीन
रचना 'रसूल' ने की
उत्तर की न है ताव,
पिला मै जामे जम ।

—:०:—

माहताव=चन्द्रमा
गिरदाब=भंवर

गज़ल

•

तेरे कितने प्रमी उदास हुए हैं
पिया सुनो, मुझे तुझ पर प्यार आया है।
कद तेरा सरव वृक्ष-सा, फल उस पर तेरे स्तन हैं
अब मैं आस्ताना जाऊगा तो गिला शिकवा नहीं करूंगा।
ये स्तन तो बगूगोशे हैं या नाशपातियां
तेरे कानों के वाले मोतियों के झालरों से सजे हैं।
जरा इन्हें भुला दो यार !
अनुभवी आशिक तेरे नाजों को पालेंगे तो
अधकचरे खेल-खेल में मारे गये
इन जालीदार लटों में जो जादुई सांकल लटक रही है।
आज रात को मुझ से मिल जा री !
कुछ सीखो तो सही, गुड़िया !
सफेद सजे कमरों में अपना शृङ्गार करना
ईश्वर ने तुझे एक ही तो ऐब दिया है !

—: ० :—

गज़ल

•

प्रणय में पिया खूब बना अफसाने गढ़ कर चला गया।
काबे औ' बुतखाने में करके बेगाना चला गया।
मैं जिस के पीछे दीवानी ज्यों शमा पर जले परवाना
उस परवाने की किसे कहूं जैसे परवाना चला गया।
नजरों के तीर पिया के हैं, भौंहें कमानियों सी उसकी
बेगम होके वह मारे है, है सधा निशाना चला गया।
वह खूब संवारे ज़ुल्फों को, कर गया परेशां सुम्बुल को
पर परिस्तान का मुखिया मुझ से कर याराना चला गया।
उसके-से मुक्तादांत कहीं ना और किसी के देखे हैं
परेशान काली ज़ुल्फें काला तिल दाना, चला गया।
अपनी काली ज़ुल्फों के जाले में मुझ को फांसा
और दिखा कर साथ एक तिल का भी दाना चला गया।
आंखें तुर्कों की सी हैं जो लूट जाये ईमान मेरा
अध्यात्म के मैखाने से करके मस्ताने चला गया।
मैं ने कितनी दास्तानें सुना-सुना उसे था मस्त किया
किया बाग में बैठाकर उस से दोस्ताना चला गया।
माशूक अग्नि का पिंड है, पर आशिक होता बेनिशान
क्या जानूं तूफां बरपा कर कैसे वीराना चला गया।
मैं मदपायी 'रसूल' बेबस, तिस पर वह हंसी उड़ाता है
पर मैं ने दर्द किसी से भी कहना ना जाना चला गया।

—: ० :—

ग़ज़ल

•

मैं हूर घुली अब दूर भगू मैं भागू, कितना सह पाऊं ।
आए न नींद सुन्दरि, मुझको तेरे बिन प्रीत अचेतन है
आंखें नरगिस की नरगिस सी ......

मैं पद्मिनी हूं, मत मुकरो प्रिय मदमत्त आज मैं बेबस हूं
मेरे जन्मांतर के साथी ......

तन पर पहराऊं बंग-वसन तब उन्नत बक्ष सजाऊंगा
मुझ को है भांग पिला क्यों दी ......

सुनहरे मेरे ओ कर्णफूल हो मेरे गले का मुक्ताहार
कैसे सम्भलूं की बर्बादी ......

हैं काले ये कुन्तल जाले सुम्बुल ज़ुल्फें मुझको फांसें
मैं बाला छल से हाय फंसी ......

'रसूल' कर रहा शिकवे सुनो दर्पण देही निर्दयी प्रिया
कोमल तन ओ पाहन हृदयी मैं चली जाऊं अब सह न सकूं ।

—:०:—

गज़ल

•

दूर-दूर से मुझे तेज के दरस कराओ,
मेरे जाने जानां हो !
अपने ऊंचे कद का सरब पेड़ लहराओ,
मेरे जाने जानां हो !

सुमन वदन को देख-देखकर बुलबुल तड़पे
दीवाने सब दिल वाले ।

तेरा तिल औ' जुल्फें आशिक को हैं फांसे
विपदा का घर प्रेम तेरा ।

आंखें तेरी काफिर जुल्फें सुरभि सनी
तिल तेरा, ना मुसलमान ।

तिल तेरा जो वही दाग गुलेलाला का
वक्ष तुम्हारा चिर किशोर ।

मनहर तेरा तिल हो जैसे बादशाह—
चीन देश का दुकानदार ।

बातें तेरी शक्कर, महके सुरभि तुम्हारी
दांत मोती अधर मरजान[1] ।

बाला ! तेरे कानों में हैं सुन्दर बाले लटके
शाही मालाएं झूलें ।

उसकी ग्रीवा लहराए तो मेरा दिल भरमाय
मैं निस्सम्बल क्या करूं ।

छुपो नहीं मेरी आंखों से, मुझको नेहा घेरे
रे मैदानों के वासी ।

वक्ष तेरा ज्योतित है स्तन हैं श्वेत कपूर
मूल्यवान यह लाल अगन ।

देह रजत सी तेरी चमके सुन्दर ऐसी दमके
तापस त्यागी का पतन होय ।

मेंहदी रंजित नाखूनों को देख हुए गमगीन
पहलवान भी पस्त हुए ।

बलगारिया का सूर्य या गांधार का चन्दा
तुम्हें देख कर लजा गए ।

सुरभिसने सत्कुन्तल सहज सलोने पिय
सुन्दर भाषी गीतों मय ।

कश्मीर तुम्हीं से जन्नत की तासीर लिए
संसार, नहीं तो, दुःखों मय ।

मुक्तमाधिके ! बाला ! तेरा नाम सजे
ताशवान[2] के कोठों पर ।

इस में क्या संदेह, 'रसूल' तेरा आशिक
उस पर होजा मिहरबान ।

—: ० :—

---

1 मरजान=हीरा विशेष

2 ताशवान=सौ वर्ष पूर्व श्रीनगर की गाने वाली गणिकाओं का मुहल्ला ।

गज़ल

●

क़सम दिलाओ मेरे यार पियारे को
कोई उसे बुलाना री !
आज छकी मदिरा उसने
आज नहीं कल पड़े मुझे
खोया मेरा प्रिय जमाल[1]
कोई उसे बुलाना री !

'अलिफ' सी मैं उन्नत थी
'दाल' सी मेरी पीठ झुकी
हाय रे उसके कुंतल जाल
कोई उसे बुलाना री !
छविमय मेरा प्रिय चन्द्रोपम
है कठिन उसे कैसे देखूं
भौहें उसकी हैं हिलाल[2]
कोई उसे बुलाना री !

मेरे प्रिय का तिल जो देखा
सकलंक चांद भी लजा गया
मिटा सूर्य का भी अभिमान
कोई उसे बुलाना री !
जाने किस मधुबाला ने
जैसे मदिरा के चषक भरे
नयनों से मृग का दहे ज्वाल
कोई उसे बुलाना री !

पलक-पलक है तीक्ष्ण बाण
छेदा मेरा जिगरा हियरा
वह न सुने, तो कोन हाल
कोई उसे बुलाना री !

जाहिर है हाल मेरा उस पर
काहे मुझ से रूठे है पिय ?
उसे पिन्हाऊं सुमन-माल
कोई उसे बुलाना री !

प्रीतम का आलिंगन कर लूं
परिधानों सी तन पर लिपटूं
काहे ताने दे मुझे बाल
कोई उसे बुलाना री !

प्रिय रूठ जाय तो मने नहीं
फिर सदन-सदन घूमे भटके
दे 'रसूलमीर' नाले केवल–
कोई उसे बुलाना री !

—: ० :—

---

1. जमाल=हसीन, प्रिय
2. हिलाल=दूज का चांद

गज़ल

●

खड़ी ज़रा मुंह से हटाओ तो यह नकाब
इधर सुन्दरी ! ला न पाऊं मैं ज़रा ताब

तू चांद सुघर या आफ्ताब
है हूर अप्सरा कोई परी
तुम छिपो नहीं घूंघट में मत डालो हिजाब[1] ।

है पार्श्व तेरा पांखुर गुलाब
री स्वर्ग सुमन की नव्य बाल
ज्योतित हो युग के कण-कण में ओ अमित-आभ ।

घुंघराली तेरी जुल्फों ने
मेरे दिल को यों लिया छीन
फांसा मुझ को फैला कर अपना प्रेमपाश ।

यह प्रणय सुरा दी मुझे पिला
नयनों के भर-भर प्यालों से
मस्ती से मेरा खस्ता दिल कर दिया खराब ।

देखा नरगिस ने कौन ख्वाब
ललचाई किस भौंरे पर वह ?
तब से उसको व्याकुलता घेरे है अपार ।

कानों में तेरे बुंदे हैं
बालों पर मणिमय कुलही है
है बिछा हुआ शय्या पर तेरे लिए सिंजाब[2] ।

रीझोगी सुन चंगो रबाब
मेरी बंसी सुन, मधुमक्खी
क्या कर लोगी फिर भला रहा ही जब न जाय ?
मधुपायी हो, मधुभाषी री
मुस्काते कुसुमों की डाली
याकूतों सी तेरे अधरों की छटा लाल !
मुझको भीतर से भस्म किया
फिर आग बुझाई नेहा की
भूंजा मेरा जिगरा जैसे हो यह कबाब !
यह पीर प्रेम की है 'रसूल'
बुलबुल या तितली क्या समझे
अन्धा क्या जाने कैसे समझा पाए चान्द ?

—: ० :—

1. हिजाब=आवरण
2. सिजाब=चादर (रेशमी)

गज़ल

•

मैं ने रोज़े रखे तो तेरे ही कारण
रुक जाओ एक दिन, दीवाने

खनखना रहीं सुनहरी चूड़ियां गढ़वाई —
तेरे कारण ।

मैं हाल सुनाऊ सुनो यार, ना, रूठो ना
अछपोशों की मालाए मैं ने गुथवाई —
तेरे कारण ।

दिन भर प्रभु से की विनय पसीजे उसका दिल
सब तीस सिपारों का पारायण किया सब रात–
तेरे कारण ।

उपवन के उन्नत सरव-रूप ! मैं प्यासा हूं
आंसू के पानी से मैं ने नदियां भर दीं–
तेरे कारण ।

मैं पलक भार सकती न उठा, अब बाण सहा
फिर तीर तुम्हारा सीने में सहना पड़ रहा–
तेरे कारण ।

सौतों ने और दुश्मनों ने बदनाम किया
कितने ताने देखो मैं ने चुप चाप सहे–
तेरे कारण ।

ए उषा-समीरण ! सुन 'रसूल' से नेह-गीत
सुरभि रहे, झड़ जाय मेरी हर पांखुरिया–
तेरे कारण ।

गजल

•

लावण्य भरे सुन्दर चन्द्रमा मेरे प्रिय
आ जाओ मेरे पास ज़रा ए मेरे यार !
विनय मेरी विनती मेरी तो सुनता जा
आ जाओ मेरे पास ज़रा ए मेरे यार !

बादामी नयनों में कितना मद है खुमार
मुझ को यों तूने सुन्दरता से दिया मार !
आ जाओ मेरे पास ज़रा ..

आओ घूमें हम चमन-चमन देखें बहार
ए सरव पेड़-से कोमल सुखद सु-रफ्तार
आ जाओ मेरे पास ज़रा

तेरी व्यालों सी जुल्फों ने किसको न डसा ?
तुझ बिन इनको कोई क्या सकता है संभार ?
आ जाओ मेरे पास ज़रा .

सुरभित फव्वारे केश तुम्हारे सुमन-सुमन
रूप तुम्हारा खिला फूल जैसे अनार
आ जाओ मेरे पास ज़रा

ए पुष्प वक्ष ! कुछ दया विचारो हम पर भी
वैर छोड़ दो मन का हलका करो भार ।
आ जाओ मेरे पास ज़रा...

नेह अगन में जली, आंच न धीमी हो
ले गए होश चेतना मेरी, मेरा करार।
आ जाओ मेरे पास ज़रा

तेरे नाखूनों को मेंहदी अरुण रंगूं
यह खून आशिकों का तेरे है लाल लाल
आ जाओ मेरे पास ज़रा ..

बुलबुलें हज़ारों आहत कीं ले ज़ीरो बम
अब 'रसूल' तू ही कर ले मनुहार।
आ जाओ मेरे पास ज़रा ..

—: o :—

ग़ज़ल

•

गले लगाऊं यार तुझे
पहन सजाऊं मुक्ताहार
दीवाने मेरे चन्द्रबदन तम में तेरे दर्शन कर लूं।
मुख दिखा गए पहले फिर काहे अपना मुखड़ा छिपा लिया ?
अब कहां देख लूं फिर तुमको
हिय मेरा कांपे बार-बार
यूसुफ से मिलता रूप तेरा यदि सुने जुलेखा एक बार।
निकले शत पर्दे चाक करे
मतवाली होकर हर बाज़ार !
मैं छुई मुई जल राख हुई किस से कह दूं मेरे गुलाब ?
मेरे अनार के फूल, मिलो
मुझ से अब केवल एक बार !
देख खुमारी आंखों से, तुम जादुगर बंगाली हो,
वन में जा रहने हिरण लगे
तेरी छवि से वे गए हार !
भौंह दुधारी तलवारें, चितवन के बाण न बरसाओ
कह, क्यों न बताए राज़ कि
जिसका सीना होगा छिन्न छार !

देखें सुरभित ये वाल-व्याल, दो लटें तेरी, जो, घुंघराली
तेरे जिम्मे हैं वे आशिक
जिन को तू डाले मार मार !

माशूक मेरे, तुम उपवन हो, बुलबुल सा चहके 'रसुलमीर'
टुक रुको, निर्दयी कान धरो,
सुन जाओ आज मन की पुकार !

—:०:—

गज़ल

●

फूल सी झड़ूं डाली से
मत रूठो बाला मर जाऊं ।
समय खिलाए मृत्यु-भाँग
तो हिरदै कितना कठिन बने
सुवर्ण बुलबुलें तड़पेंगी
मत रूठो ...
तुझ सी सुन्दर पद्मिनी नहीं
तुम हो मेरे गोपाल मदन
यह नेह-ताप सन्याम जले
मत रूठो ...
भौंह कमानी कजरारी,
चुभ गए तिरछे मोह-तीर
सब प्रेम हृदय को छेद गए
मत रूठो ...
हिले गले में कण्ठ माल
सूर्यमुखी हैं कर्ण फूल
शीर्ष सुहाए जाली से
मत रूठो ...
चन्द्रमुखी आना सायं
ज्योतित कर गांव चन्द्रिका से
अल्पायु अरी, घूंघट न काढ़
मत रूठो ...

प्रेम अग्नि में राख हुए
ज्यों शेखसना[1] हिन्दुआनी से
और जनेऊ पहन चले
मत रूठो ...

किस साकी से इतनी पी ली ?
ओ मेरी नरगिस प्रियतमा !
तेरा स्नेह भौंरे मारे
मत रूठो ...

मैं पड़ा नींद में था निचिंत
चैन को मेरे लूट लिया
'रसूलमीर' फिर भी गाए–
मत रूठो बाला मर जाऊं।

—: ० :—

1 शेखसना=एक ईरानी सन्त जो एक विधर्मी स्त्री के प्रेम में धर्मच्युत हुआ।

गज़ल

●

बाला ! मरूं बाला मरूं बर्बाद गुलिस्तां हो जाऊं।
ए काश कि दिलबर आ जाए प्याला भरूं अरमान छुटे।
घर आए पिया मैं जीव धरूं बर्बाद गुलिस्तां हो जाऊ।
तिल तिल काटा कैसे मुझ को नेही हियरा दो टूक हुआ।
निर्ममता कितनी सहन करू बर्बाद गुलिस्तां हो जाऊं
नवनीत-कटोरे चांदी के हैं स्तन जुही की डाली से
याकूती अधरों पर न मरूं ? बर्बाद गुलिस्तां हो जाऊ।
मनहर के मन में वास करू यह तेज़ अगन है नव यौवन
मन पलने में डोलूं झूलूं बर्बाद गुलिस्तां हो जाऊ।
उसकी नासिका-कटारी ने मुझ बाला की दुर्दशा करी
हिय छिन्न हुआ मैं हाय झरूं बर्बाद गुलिस्ता हो जाऊ।
वे रोष भरी काफिर आंखे हो सके नहीं वह मुस्लमान
सुरभित कुंतल हैं, उसे वरूं बर्बाद गुलिस्तां हो जाऊं।
शक्कर सी है मुस्कान मधुर पीडित हृदयों का साथी है
जी है उसकी चाकरी करूं बर्बाद गुलिस्ता हो जाऊ।
अभिलाषा ने मुझ को घाला है कठिन ढूंढना उसे 'रसूल' !
अब रोज़े कयामत उसे धरूं बर्बाद गुलिस्तां हो जाऊं।

—:०:—

गज़ल

मद पिला यार ने मुझे किया वर्बाद सखी
मैं वलि जाऊं उस प्रियतम की।
देख खुमारी नज़रों से री डाला मुझको मार
अजगर-अलकों ने डसा मुझे।
पलकों के पट ज़रा उठाता, होता मैं नीरोग
मैं नरगिस हूँ बीमार पिया।
तीरंदाज वड़ा है प्रिय, री मुझको काटा, हाय !
तीर हृदय से चिपक गए हैं।
कौन दोष था मेरा मुझ को मोहबाण से छेदा
वक्ष खोल मैं रही सामने।
मुझे मसाया, मद मेरा काफूर किया मैं न रोऊं
इश्क अगन ने मुझ को जारा।
कान धरे तो विनय करूं मैं उसकी, प्रिय से कहो ज़रा
आए तो फिर यारी हो।
उसके चांदी से तन को अपने तन से आज छुआ लूंगो
मेरे तन का यह दहन शमे।
बसन फाड़ लूं अपने, पिय को खोजूं जंगल-जंगल
उसके पीछे-पीछे हो लूं।
या 'रसूल' फिर प्रेम-कसौटी पर तन अपना कस ले
अगर परीक्षा प्रिय चाहे।

—:०:—

गज़ल

•

सखी सुनो शिकवे शिकायतें, सोचो तो
चला जा रहा अरे संभालो निज यौवन, सोचो तो ?
नेह भरूं अंगों में, प्रिय वादा तोड़े
पत्थर हुआ इस तरह मेरा प्रणयी मन, सोचो तो !
मदन पराया हुआ, बदन को छिन्न किया
तब से टूटा क्षण भर भी मेरा न रुदन, सोचो तो !
मुए इश्क से ज़िंदा और रूप ने जारा
जोगी औ' संन्यासी और तपस्वी, वन, सोचो तो !
भौहें प्रिय की कमान, नारंगी ज्वाल स्तन
मुस्कानों से ही सबका करता है रंजन, सोचो तो !
अधनींदी आंखें 'वे', मुख 'मीम', अलकें 'जीम'
पारद सा चंचल स्वभाव और रौप्यतन, सोचो तो !
लैला मजनूं को चाहे जग बदनाम करे
क्या पर्वा है जब दो के मन का हुआ मिलन, सोचो तो !
मैं हृदय चोर की दूरी से ही राख हुई
प्रिय कर्णफूल वह मेरे कंठ का आभूषण, सोचो तो !
पहले था 'डूरू' में फिर 'पोगल परिस्तान'
ऐसे ही मुझ को छोड़ गया वह 'रामवन', सोचो तो !
उसके माथे का टीका ज्यों अल्ला का नूर
हो आफ्ताब पर चन्दा का मण्डल शोभन, सोचो तो !
'रसूलमीर' उस को अर्चे मधु प्यालों से
रससागर में धीरे उसको वह करे मगन, सोचो तो !

गज़ल

•

देखो कैसे नेह ताप ने तिल-तिल हमको राख किया,
मर जाएंगे तेरे सिर है भार हमारा !

तेरे नेह ने, सुन्दरि, कितने लोगों को बर्बाद किया,
कांटे भी जल कर राख हुए
मुर्झाया हर फूल उसी से
सूख गई कमलिनी हो गई बेकरार !

हृदयहीन लोगों से तुमने सहृदय सा व्यवहार किया,
यही तुम्हारा है स्वभाव प्रोत्साहन का, मन भावन का
लेकिन निबलों पर क्यों बनते ज़ोरदार !

मैं बसन्त का पवन भेज दूं तेरे नाम का संदेसा ले,
हार चुका मैं अब सह कर दाग दहन के इस तन पर
तेरी अभिलाषा से ही उतरा कामदेव का अहंकार !

बड़े लोग नामी महान तेरे आगे हैं–
खड़े पसारे आंचल, पर मुझ को देखो
अपनी आंखों के तारों पर मैं ने तेरे मोहबाण ले लिए
सहे चुपचाप !

अभी तुम्हारे बाणों के हैं लौह फाल
मेरे हिरदै में धंसे पड़े, छलनी हो गया मेरा तन
नहीं रोए वह जो इतना घायल हो जाय !

तेरे नयनों का क्या काम यही सजनी ?
प्रेमी लोगों को चितवन से घायल करो
मुझको मारे केवल इनका ही खुमार !

हुस्न अगर खंजर सा काटे, आशिक आगे शीष झुकाए
प्रेमी जग की प्रभुता
केवल ऐसे ही पा सके सदा
लगा गया सब को कलंक
हाय ! यही संसार !

शेखसना को हिंदुआनी का प्रेम भरा हिय घेर गया
प्रकट हुई यह बात मुखर हो गई शहर में बाजारों में
प्रेम और परहेज बीच है एक बड़ी चौड़ी दरार !

बचपन सब का चला गया किसका इस ने साथ दिया ?
तुम चन्दा सी सुन्दर हो बस क्रुद्ध न होना
नहीं तोड़ना केवल जो
'रसूलमीर' से तेरा अबतक है करार !

—: o :—

गज़ल

क्षण भर तो रुक जाओ ज़रा ए जाने जां
दीवाना मुझको बना गए !

जादू मुझ पर किया सुर्मई आंखों से
प्यार यार का दिल में है कितना सह लूं
सरव पेड़ हों झूम रहे !

भौहें तेरी धनुसी हैं दुश्मन प्राणों की
नाक कटारी बाण चितवनों से निकल
याकूत अधर दंत दाने !

पलकों के जो तूने मारे तीर मुझे
छलनी उन से हुआ प्रणय से भरा हृदय
तुम में कुछ न दया उपजे !

मोह जाल में फंसा गए मुझ बाला को
उल्फत से यों मेरे मन को घेर लिया
छीने होश मधुर सुर से !

ए स्मित बदन पिय ! तूने मेरे होश लिये
चांद सी उगी अस्त कराया तू ने ही
अब हंसो पुष्पमुख तुम काहे !

सुन्दर गेहुँई कांति वाले मेरे प्यारे
रक्त मेरा तेरे हाथों पर लागा है
मेंहदी एक बहाना है !

तुम को खोजूं आद्यन्त परिस्तानों में
ऊंच नीच पथ और पीर-आस्तानों में
जग में फिर भी नहीं मिलोगे ?

रहा नहीं कुछ और 'रसूल' क्या व्यक्त करे
मैं ने पूछा हाल चश्मे बीमार से
उसने कहा स्वय जानो !

दीवाना मुझ को बना गये
क्षण भर तो रुक जाओ ज़रा ए जाने जां !

—: ० :--

गज़ल

•

जब से मैंने अपना सहजात सनम देखा
तब से वह कभी नहीं आया—इस ओर

वह सुमन सुकोमल-देह सरव सा है उन्नत
हाय कयामत ढाये प्रेमियों पर अपने
अलकों की दमक रही आभा—

यह स्तनाग्र हैं या कलिका या 'मीमाक्षर'
ऊंचा कद 'अलिफ' बाल 'दाल' या 'जीमाक्षर'
हर खास आम को रे फांसा—–

अरुण रूप ऐसा दमके ज्यों लौ चमके
हैं नाज़ भरी दो भौंहें जैसे हों कमान
दृष्टि तीर जिगर में पैठाया ––

बीमार नयन नरगिस से विकसित दीख रहे
ले गये आशिकों के दिल छल से चुरा-चुरा
हरिणों का दल बेचैन हुआ––

उसकी सुगन्धि से ईर्ष्या करता सुमन-सुमन
कानों के बालों से अप्सराओं का नन्दन
पूरी की मेरी अभिलाषा ––

मेरा भी था सरव कद अरे प्रेम रोग ने तोड़ा
कोई कहदे मुझ पर ऐसा मातम क्योंकर छाया?
मैंने कब किसको दुत्कारा।––

छिपके मैं उसको ले आई अब कहां गया ?
वन में शायद छिप गया, खोज उसको लूंगी
हैं उस के ढंग कि ज्यों पगला --

उस सुन्दर प्रिय को भेंट आज क्या क्या भेजूं
है दर्द यही मेरे दिल में, क्यों देह धरूं ?
बस हो न सका दिलबर मेरा --

ऊब चुका है बहुत क्या करे 'रसूलमीर'
उसका जीवन बेरंग, रंग क्या पाए वह ?
निर्जन का जैसे हंगामा --

--: o :--

गज़ल

•

लुक छिप के आ मदन, नहीं तो होश मेरे खो जायेंगे,
मेरे हिरणों से कजरारे दो नयन वरन भूल जाएंगे।
तेरी नरगिस सी आंखें हैं तो मुझ पर सीधी नज़र डाल
है मुझे प्रेम की व्याधि लगी तुम आओ रोग गल जाएंगे।
प्रेमपीर से अगन लगी तन मेरा जला मैं राख हुई
हम अश्रु-नीर से कभी खंडौरा के समान गल जाएंगे।
दिल मेरा तूने चुरा लिया कामिनी! यद्यपि मैं बेकसूर,
तुझ से हम दूर जायेंगे, जोगी सी धूल रमाएंगे।
सीने में तुम को छिपा गले भेंटूंगी सुन्दर श्याम! मेरे
तेरी सरवों सी ऊंचाई को निजतन से हम ढाँपेंगे।
शाहबाज़ मेरे आ जाओ लौटो आज हृदय के राज़ सुनो
हम नाज़ों से यह जिगर भून के तुम को मांस खिलाएंगे।
तेरी अदाओं की मुट्ठी से हर चितवन बाण सी छूटे है
कीजिए हमें घायल हम तेरे धनु पर बलि-बलि जाएंगे।
रुपहले शरीर 'जीम'-जुल्फों को लहरा के आ जाओ मितवा
सुरभित इत्रें और कस्तूरी तेरे तन पर मलवाएंगे।
नयनों के प्यालों में खूने दिल मदिरा सी ढाले 'रसूल'
ताज़ा दिल का भूंजा कबाब तेरी ही भेंट चढ़ाएंगे।

—:०:—

ग़ज़ल

•

नींद न आए जब से सखि उस को देखा
उस से पूछो काहे नहीं इधर आया ?
प्रेम दहन से राख किया सीना मेरा
उस से पूछो काहे नहीं इधर आया ?
क्योंकर वह सहे कि जिसका हिरदय जला भुना
उस से पूछो काहे नहीं इधर आया ?
तीर इश्क का मारा मुझ को अनजाने में
किस द्वेषी ने उसे कहा ये तीर चलाओ
वह नहीं मरे जिसको चितवन का बाण चुभा ?
सौघर में पियरा बैठा जाने किस घर में
मेरा पत्रा दो उसे बता के नाम मेरा,
शायद पढ़ ले खत प्रियतम मेरा पगला।
पिला-पिला मै प्रियतम ने क्यों भरमाया ?
होश मेरे ले लिए करूं अब कौन गिला ?
मैं फूलों की डाली मुझ को मिटा गया।
छज्जा जालीदार या कि हो रंग भवन
उठो सखी, पिय सोये, एक पलंग बिछा
और न चाहूं बगल में उस के बस सोना।
बड़े शौक से नाव वुलर में डाली थी
वह शरद वायु सा बीच लहर में आन पड़ा
संगर[1] में ऐसे ही मेरा दिवस ढला।

पागल मजनूं हुआ करे क्या समझे नहीं
ज्यों कि झील में उसकी नैया खुली बह गई
पढ़ ले अगर कुरान तभी मिल सकती लैला ।

प्रेम-कुल्हाड़े से पिय ने आघात किया
मुखड़ा दिखा गया जली बिरहा में
छुई मुई मैं का से कह लूं यह दुखड़ा ?

सांकल बजी द्वार को किसने खींचा री
हाय ! पिया तो नहीं, हृदय मेरा डूबा
बाहें मैंने तो उसके वक्षस्थल खोला ।

उस पिय की तड़प और मुहब्बत से 'रसूल'
छोड़ कर वतन चला ढूंढने पगले को
जिगरा उसका बेकरार हो गया, करे क्या ?

—:०:—

1 संगर=झील वुलर के किनारे की एक शिला जहां नाव रुके तो डूबने का अन्देशा होता है ।

ग़ज़ल

मैं अप्सरा थी मेरे अरमान अधूरे रहे, मदन !
मेरे आंचल में आग जले, फिर मेरी यह छुटपनी-देह
मदिरा देकर मुझे भुलाया, बोलो यह कौन तरीका है
मैं तेरी प्रिया हूँ, मदन !
देखो मेरा जुही फूल सा तन, दर्पण से साफ है !
पर तुझ को तो ज़रा भी दया नहीं रही
तेरे लिए सोलहों श्रृंगार मैं आज करूं
तेरा दामन मेरे हाथ है, मेरे मदन !
तेरे इश्क में मैं ने मर्यादा तोड़ी !
उस भ्रमर के लिए खूने दिल मैं बहा रही हूँ।
नरगिस का हूं फूल, मदन, हैरान तुम्हारे करतब पर।
मजनूं लैला पर पागल हुआ, हो गया दीवाना !
तुम ने मेरा दिल जिगर अरे छीना !
अब तो 'रसूल' तन-मन बलि करे तुम्हीं पर
और दर्दे दिल की दास्तां तुझे सुनाए।

—: ० :—

ग़ज़ल

●

मध्याह्न हुआ मैं इंतज़ार कर हारी, मेरे खुदाया
क्या मेरा अपना हृदय-जिगर आएगा नहीं मेरे घर ?
डूब गई वह शमा खिंची फानूसों के रंगों से
मैं परवाना बन जाऊंगा तन-मन उस पर वारूंगा
पता न पाऊं पाया उसने पद ऊंचा औ' भारी, मेरे खुदाया
हाय न देगा दर्शन अपने, कहां न जाने खोया
उसके कोमल पादों पर मैं अपना यह सिर वारूं
मेरा उपाय तो कुछ बोले, कब समझे मुझे अनारी ?
मेरे खुदाया
जाने किस सौतन ने उसको यह तदबीर बता दी
अपस्मार से पीड़ित करके मुझ को वह चला गया,
दासी उस के पास भेज दूं—'जा तू उसे मना री !'
आशिक छिप के रहें वनों में कोई उनको देखे ना
आंचल को समेट ना पाए जान गई दुनिया सारी
युग के पर्दे फाड़े उनकी सुन्दर देह उघारी ! मेरे खुदाया
मजनूं और वामिक और नागराय आशिक
दिल को लेकर निकले और प्रिया ढूंढो
पूरी की हीमाल और अज़रा लैला की यारी !
प्रथम उतारा मेरा मद फिर नेह सूत्र में बांधा
फिर लपटों में ज्वाला की मुझको जारा राख किया
हाय ! मुझे वह नष्ट कर गया जुही फूल की डारी !
कहां गए दीवाने लौटो ज़रा कदम ठहराओ तो
नहीं पसीजेगा पिया मेरा यही एक मेरा अरमान
कहीं तो मिलूंगी प्रिय से, अब तो मेल बढ़ा री !

—: ० :—

गजल

●

खो गया री मेरा यार किसे बाला बताऊं ?
फूल-सी मुर्झा गई मौन बुलबुल मैं हुई
जिगर में भर गए खार[1] किसे ...
वह बादामों-सा दिखे है खिला फूल-सा तन
काटे ज्यों शाहमार[2] किसे ...
थी जुही फूल कोमल शुष्क मुझ को कर गया
कच्ची मैं फूल अनार किसे ...
प्रिय छेदे मेरी देह रोया भी न जाए
लघु क्योंकर करूं भार किसे ...
दया न उपजे उसे भस्म मुझ को करे वह
संभले न नेह का भार किसे ...
बर्बाद कर दिया मुझे नहीं आए एक बार
वह कण्ठ का मुक्ताहार किसे ...
लैला मजनूं साथ रहे यूसुफ जुलेखा भी
रहे जन्म भर यार किसे ...
'रसूल' ध्यान दो पूरा आज यह संगीत सुन
रोओ नहीं ज़ार-ज़ार किसे ...

—: ० :—

1 खार=कांटे 2 शाहमार=अजगर

गज़ल

●

हे चन्द्रवदन प्रिय करुणा कर,
तुम पर मैं अपना सिर वारूं,
माशूक मेरे जाने जानां।

ग्रीड़ोन्नत प्रियतम सुमन रूप
फूलों के नव कलिका धर
दो नयन तुरुक दो मस्ताने
लेकर हाथों में दो खंजर
तुर्किस्तान से ज्यों आए !
नज़रों के तीर किन्हे दोगे ?
भ्रू भंग तेरा ओ धनुर्धर !
कुर्बान मेरा दिल है तुम पर
मुख गोल देख लट घुंघराली
ज़ुल्फें सुम्बुल से सुन्दर तर
है परेशान हो रही अक्ल
या मुख इतना सुन्दर सोहे
मानो 'नख्शब'[1] का चंदा है
है पड़ा घड़ों में खंदा के।
तेरे नेह का घाव सहूं
है रूप तेरा ज्यों यमन-रत्न
मोती से दांत अधर मरजां।

बस दिखा जुल्फ औ' निज कुन्तल
फैला कर इनका प्रणय जाल
ले गई मेरा सम्पूर्ण हृदय ।
मै पिये खुमारी में 'रसूल'
थिर कभी हसीना हुस्न नहीं
अफसाना यह मशहूर हुआ ।

—: ० :—

1 नख्शब=ईरान का एक शहर

J & K ACADEMY OF ART CULTURE & LANGUAGES